مئی ۲۰۱۵ء

رفع اللہ رایۃ العباس

ماہنامہ

# شعاع عمل

لکھنؤ

نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

قال رسول الله (ص) إن الله قد فرض عليكم طاعتي ونهاكم عن معصيتي، وفرض عليكم طاعة علي بعدي ونهاكم عن معصيته، وهو وصيي ووارثي، وهو مني وأنا منه، حبه إيمان وبغضه كفر، محبه محبي ومبغضه مبغضي، وهو مولى من أنا مولاه، وأنا مولى كل مسلم ومسلمة، وأنا وهو أبوا هذه الأمة

القندوزي الحنفي في ينابيع المودة

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

Annual Rs. 200/-

Per copy-Rs. 20/-

Karbala Naseer-ud-deen Haider lucknow

May 2015

يا ابا الفضل العباس

# SHUA-E-AMAL

Lucknow

# शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

Per Copy 20/-
**Annual 200/-**

बिस्मेही तआला

# नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

## इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

मई 2015 ई०

# शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 11 — अंक 11

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

**पर्यवेक्षक:**
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

**संरक्षक**

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

**सलाहकार समिति**

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान
- सै० हसन अब्बास नक़वी, मुम्बई
- मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- सै० अहमद अब्बास नक़वी, मुम्बई
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै० सैफ़ तक़ी नक़वी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

अध्यक्ष प्रचार प्रसार: माननीय **नवाब रज़ा** साहब, भोपाल

सम्पादक: सै. **मुस्तफ़ा हुसैन** नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक: क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी
आसिफ़ अब्बास नौगांवी, इमरान आग़ा, समद अब्बास

**मिलने का पता**

## नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

**Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808**

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

## lEiknu lfefr

- ➪ डॉ0 अमानत हुसैन नक़वी
- ➪ वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- ➪ सैय्यद सुहैल अब्बास नक़वी, मेरठ
- ➪ गौहर अली मुबारकपूर, आज़मगढ़
- ➪ मुहम्मद शादाब तफ़ज़्ज़ुली
- ➪ मज़हर हुसैन 'ताज' लखनवी
- ➪ शाहिद अली आज़मी
- ➪ नसीर हुसैन जलालपूरी
- ➪ अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- ➪ डॉ0 आरिफ़ अब्बास
- ➪ रेहान आलम, लखनऊ
- ➪ बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- ● tQj+gqSu fjtoh ¼;wåihå½ eSustj
- ● bjQku gSnj] ¼;wåihå½ e/;çns'k
- ● dQ+r dhu dkoh] ¼;wåihå½ ngyh


R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10





**WEBSITE:**
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

**E_mail:**
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com


## okf"kZd v'kaknku

1– एक साल के लिए 200/-

2– पांच साल के लिए 800/-

3– लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

# विषय सूची

ebZ 2015 bZ0

रजबुल मुरज्जब: 1436 हि0




मासिक ^^'kqvk&,&vey**
(हिन्दी–उर्दू)

^[kkrunkus bTrgkn uEcj**
nfud udkc y[kuÅ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
lHkh fdrkcks को डाउनलोड करने के लिए
ykWx vku djsa gekjh oscl kbV

*Log on Our Website:*
www.noorehidayatfoundation.org,
www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

# वहाबी मत का सत्य

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
lEiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

fd‰r %¼8½

सुरए नूह में है कि "वह मुशरेकीन कहते हैं कि अपने ख़ुदाओं को कभी न छोड़ना, वोद को, सवाअ को, यग़ूस और यऊक़ व नसर को" यह सब उन मूर्तियों के नाम है जिन्हें वे साफ़–साफ़ ख़ुदा कह रहे हैं।

सुरः–ए–हूद में है कि "हम कभी भी इन ख़ुदाओं को नहीं छोड़ेंगे।"

फिर है के "हम समझते हैं कि हमारे ख़ुदाओं में से किसी ने तुम्हें कुछ हानि पहुँचा दी है।" और अल्लाह कहता है कि "नहीं लाभ पहुँचाया उनके ख़ुदाओं ने जिन्हें वह अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे कुछ भी।" और सुरः–ए–हजर में है कि "हमने आपको बचाया उन मज़ाक उड़ाने वालों से जो अल्लाह के अतिरिक्त दूसरा ख़ुदा बनाते हैं।" और सुरः–ए–बनी इस्राईल में है कि "अगर उसके साथ और ख़ुदा होते जैसा कि वह कहते हैं तो उस समय वह अर्श के मालिक के मुक़ाबले में कोई सूरत (उपाय) निकाल लेते। "और सुरः–ए –मरियम में है कि "उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर बहुत से ख़ुदा बना लिए ताकि वह उनके लिए वर्चस्व दिलाने वाले हों, कदापि नहीं बहुत जल्दी उनकी उपासना से इनकार करेंगे और स्वंय उनके मुख़ालिफ़ (प्रतिपक्षी) होंगे।" और सुरः–ए–अंबिया में स्वंय उनकी ज़बानी है कि "क्या यही वो व्यक्ति है जो तुम्हारे ख़ुदाओं की चर्चा किया करता है?"

फिर हैं जब जनाबे इब्राहीम ने मूर्तियों को तोड़ डाला "उन्होंने कहा कि किसने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह बर्ताव किया वह निश्चय अत्याचारियों में से हैं "उन्होंने (इब्राहीम[अ] से) कहा," क्या तुमने हमारे ख़ुदाओं के साथ यह बरताव किया हS ऐ इब्राहीम?" फिर कहा "उन्होंने कहा कि इन्हें आग में डाल दो और अपने ख़ुदाओं की सहायता करो।"

और सुरः–ए–फ़ुरक़ान में है

"उन्होंने उसे छोड़ कर ऐसे ख़ुदा बनाए हैं जो किसी वस्तु को बना (सिरजन) नहीं सकते और वह स्वंय बनाए गए हैं।" इन सबसे पता चलता है कि वह मुशरिक लोग अपने बुतों को बे झिझक 'इलाह' अर्थात् भगवान, ख़ुदा कहते थे इसके विपरीत किसी मुसलमान से जो हज़रत[स] या औलिया व पहुँचे हुए अल्लाह वालों में से किसी का आदर सत्कार करता है पूछा जाए कि तुम इन्हें ख़ुदा समझते और उनकी उपासना, मुक्ति करते हो? तो वह कदापि नहीं मानेगा बल्कि कठोरता से इसका खण्डन करेगा। इसी से उन मुशरिकों और मुसलमानों में अन्तर पता चलता है।

मुसलमानों के लिए यह कहना कि "उनका रोज़ा नमाज़ आदि सब जनता को धोखा देने के लिए है और अपने शिर्क को इस्लाम के दामन में छुपाना है।" इसके जवाब में कोई व्यक्ति उतने ही ऊँचे सुर के साथ यह कह सकता है कि नज्दी वहाबियों का नमाज़ रोज़ा और हज आदि सब दिखावा है और इसका सच्चाई से कुछ लेना देना नहीं क्योंकि वह उस रसूल[स0] के आदर की महिमा को नकारते हैं जिनके द्वारा उनको यह सब बातें याद हुईं।

इस प्रकार एक दूसरे को कहना कोई ज्ञान चर्चा का आभास नहीं देता अतः इस पर अधिक लिखना समय की बरबादी है।

## pkSFkk v/;k;
## ogkch fopkj lkjseqlyekukadsckjsesa

वहाबी लोग अपने को छोड़ दुनिया के सब मुसलमानों को काफ़िर (नास्तिक) मुश्रिक समझते हैं। आलूसी ने "तारीखे नज़्द" में एक महत्वपूर्ण वहाबी धर्म गुरू शैख अब्दुल लतीफ बिन अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी की एक बड़े लेखांश को लिखा है जिससे पता चलता है कि सारे मुसलमानों पर उनके क्या क्या इल्ज़ाम हैं जिनमें से बहुत सी बातें झूठ हैं और कुछ सच हैं मगर उनको ग़लत कहना ग़लत है। जैसे यह कि ये अल्लाह से मोहब्बत के बजाए दूसरों से प्यार करते हैं जबकि रसूल और आले रसूल[स] या दूसरे औलिया व पहुँचे हुए अल्लाह वालों से जो लोग प्यार करते हैं वह अल्लाह के मुक़ाबले में नहीं बल्कि अल्लाह के लिए ही है या इसलिए कि उन्होंने उसके धर्म के लिए बड़े बड़े काम किए उसके मार्ग में बलिदान दिये। ऐसा प्यार एक धार्मिक कर्तव्य की तरह है। अतः 'ज़विल कुरबा' (आप के परिजन) की मुहब्बत के बारे में कुरआन में आयत है और रिसालत (रसूल होना) का बदला, मान्य देय कह कर मांगा गया है तो जिसने इस मुहब्बत से इन्कार किया उसने हज़रत का हक़ नहीं दिया और एक जगह कहा गया है कि वह जिनके पास ईमान और अच्छे कर्म हैं उनके लिए अल्लाह एक मुहब्बत रख देता है। अर्थात् उस प्रेम को लोगों का धर्म ठहराता है। और हज़रत इब्राहीम की ज़बानी है कि

"पालनहार! मैंने अपनी सन्तान में से कुछ को तेरे घर के पास रखा है। हे पालनहार! इस कारण कि वह नमाज़ पढ़ें तो कुछ लोगों के दिलों को उनकी ओर झुका दे कि वह उनसे प्रेम करें।"

और सुरः–ए–बराअत में हैं कि

"अगर तुम्हारे बाप दादा आदि खुदा और रसूल से अधिक तुम्हें प्रिय हों तो यातना (अज़ाब) के इन्तेजार में रहो।"

यहाँ अल्लाह के साथ प्रेम में रसूल भी सम्मिलित हैं। अनस की रिवायत है कि पैग़म्बर[स] ने कहा किः

"तुममें से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उसके पिता, पुत्र और सब लोगों से अधिक प्रिय न हूँ।"

इसको बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने लिखा है। और सुनन इब्ने माजा में अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से रिवायत है कि

"हज़रत[स] ने कहा कि अल्लाह की क़सम किसी के दिल में ईमान (आस्था/विश्वास) नहीं आ सकता जब तक मेरे अहलेबैत (घर वालों/सन्तान) से प्रेम न करे, अल्लाह के लिए और मेरी वजह से और हज़रत[स] ने हज़रत अली[अ] के लिए खैबर के दिन कहा कि कल उसे अलम (ध्वजा) दूँगा जिससे अल्लाह और रसूल[स] प्रेम करते हैं और वह अल्लाह और रसूल[स] से प्रेम करता है।"

इसे भी बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने लिखा है। अतः स्वंय हज़रत अली[अ] से कहा

"ऐ अली[अ]! तुम्हारी मुहब्बत ईमान और तुमसे बैर कुफ़्र (नास्तिकता) व निफ़ाक़ (ऊपर से मानना परन्तु अन्दर के मन से नकारना) है।"

और इसी प्रकार की और भी बहुत सी हदीसें हैं। अब जो लोग रसूल[स] से प्रेम आदि को शिर्क के कारणों में साफ़ कहते हैं तो पता चलता है कि उनके दिलों में ज़रा भी रसूल व आले रसूल[स] (रसूल की सन्तान) के लिए प्रेम नहीं है जिसके बाद रसूल[स॰] के अनुसार ईमान से वंचित होना खुला हुआ है। मगर जो सच्चे ईमान वाले हैं वह उनसे प्रेम को अल्लाह की ओर से एक कर्तव्य/आदेश समझते हैं।

और इब्ने अब्दुल वहाब की किताब 'तौहीद' के व्याख्याकार का यह कहना है कि यह उनसे अल्लाह से अधिक प्रेम करते हैं और यह उनके मार्ग पर इतना खर्च करते हैं कि जिसका दसवाँ हिस्सा भी अल्लाह के लिए ख़र्च नहीं करते, बिल्कुल गलत है बल्कि यह उनसे प्रेम अल्लाह के प्रेम की वजह से करते हैं। और जो कुछ उनके नाम पर ख़र्च करते हैं वो भी अल्लाह की

प्रसन्नता के लिए करते हैं।

अजीब बात ये है कि यह मुर्दो की कब्रों की ज़ियारत दर्शन और उनकी ओर से दान पुण्य के और तवस्सुल (माध्यम लेना) की वजह से मुसलमानों को काफ़िर कहते हैं और उनके बहुत बड़े इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी इन चीजों को उन बातों में गिनते हैं जिन पर दुनिया के सारे धर्मों के लोग एक मत हैं। जो मानव प्रकृति की मांग हैं अतः तफ़सीरे कबीर में इस आयत के बारे में कि 'लोग आप[स] से आत्मा के बारे में प्रश्न करते हैं।' आत्मा के अमर होने के बारे में लिखते हैं:

"दसवाँ सबूत यह है कि हिन्दू, रोम, अरब, अजम और पूरी दुनिया के धर्मो वाले यहूदी हों या ईसाई मजूसी या मुसलमान सब अपने मुर्दों की ओर से दान पुण्य करते हैं उनके लिए अच्छी दुआ करते हैं और उनकी कब्रों की ज़ियारत को जाते हैं। अगर ये सब ये न समझे होते कि मरने के बाद भी वह किसी न किसी तरह का जीवन रखते हैं तो उनका यह काम व्यर्थ होता। इन सब का एक राय होना इस दान पुण्य पर इस बात का सबूत है कि यह सब प्राकृतिक रूप से बिना किसी भेद भाव के यह मानते हैं कि असल मनुष्य शरीर के अलावा कोई भाग है और वह चीज़ शरीर के मुर्दा होने के बाद भी मुर्दा नहीं होता।"

पैग़म्बर[स०] की हदीस से भी इसका सबूत मिलता है। अतः सहीहे मुस्लिम में हैः

"बड़ा अच्छा काम ये है कि अपनी नमाज़ों के साथ अपने माता पिता की भी नमाज़ें पढ़ो और अपने रोज़ों के साथ अपने माता पिता के रोज़े रखो।"

इस हदीस के बारे में इब्राहीम बिन ईसा तालक़ानी ने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से पूछा तो उन्होंने कहा कि इस हदीस की सनद (प्रामाणिकता) में तो कमी है मगर मुर्दो की ओर से दान में कोई मतभेद नहीं है।

इब्ने अरबी की "महाज़रतुल अबरार" में दो जगह पहले भाग और दूसरे भाग में अनस बिन मालिक की रिवायत है

"किसी मुर्दे की ओर से जो दान किया जाता है उसे फ़रिश्ते अल्लाह की नेमत के रूप में उसकी क़ब्र के पास लाते हैं और पुकारते हैं 'यह तेरे लिए उपहार भेजा गया है'।"

वहाबी धारणा कि ये लोग ख़ुदा समझकर प्रेम करते हैं, झुकते हैं और उनसे उम्मीदें बान्धते हैं, इसमें पहला हिस्सा कि वह ख़ुदा समझते हैं बिल्कुल ग़लत है। हाँ प्रेम करते हें जिसके बारे में पहले खुल कर बात हो चुकी है और ये कि वे झुकते हैं सही है मगर उनके अल्लाह से निकट होने की वजह से झुकना है वास्तव में अल्लाह के लिए झुकना है ना कि लोगों और चीज़ों के लिए और उम्मीद अल्लाह से है या उनके द्वारा ना कि वस्तुतः उनसे।

डर और उम्मीद के बारे में इमाम अबूहनीफ़ा नुअ़मान बिन साबित की व्याख्या किताब "अलआ़लिम वल मुतअ़ल्लिम" में है। मुतअल्लिम (छात्र/शिक्षार्थी) का प्रश्न है कि जो किसी से डरे या उम्मीद रखे तो क्या वो काफ़िर है? इसका जवाब जो आलिम (विद्वान/शिक्षक) ने दिया वो ये है

"आस और डर के दो रूप हैं। एक यह कि कोई व्यक्ति किसी से उम्मीद करे या उससे डरे ये समझते हुए कि वो स्वंय अल्लाह को छोड़ कर कोई हानि या लाभ पहुँचा सकता है तो ये व्यक्ति काफ़िर है और दूसरी सूरत ये है कि किसी से उम्मीद रखता हो या डरता हो भलाई की उम्मीद या हानि के डर की वजह से अल्लाह की ओर से कि कहीं अल्लाह के द्वारा मुझ तक भलाई पहुँचाये या उसके हाथों मुझ पर कोई विपत्ति आए या किसी नेमत को ले ले तो ऐसा व्यक्ति काफ़िर नहीं होगा। इसलिए कि पिता भी पुत्र से उम्मीद रखता है कि वह उसे लाभ पहुँचाएगा और कोई व्यक्ति अपनी सवारी के जानवर से उम्मीद रखता है कि वह उसे उसकी मन्ज़िल (गंतव्य स्थान/ठिकाने) तक पहुँचाएगा और राजा से उम्मीद रखे कि वह उसकी उसकी गुहार सुनेगा अपने पड़ोसी से उम्मीद रखता है कि वह लाभ पहुँचाएगा तो

इन बातों से कुफ़्र नहीं हो जाता। इसलिए कि इसके मन में ये है कि असल केवल अल्लाह ही लाभ हानि पहुँचाने वाला है मगर शायद वह इस पुत्र के द्वारा मेरी सहायता करे या इस राजा के द्वारा मेरी गुहार सुने। इसलिए ऐसा व्यक्ति काफ़िर नहीं है। इसी प्रकार कुरआन मजीद में है हज़रत मूसा[अ] की ज़बानी कि मुझे डर है कि कहीं ये लोग मुझे मार न डालें। पता चला कि ऊपरी कारणों को देखते हुए किसी से डरना कोई कुफ़्र का कारण नहीं है।

ये कहना कि ये लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरों से दुआ मांगते हैं तो ये पहले बताया जा चुका है कि यह निजी रूप से दूसरों से दुआ नहीं मांगते बल्कि ये होता है कि वो अल्लाह के यहाँ के लिए दुआ मांगे या वो आज्ञा दे तो उसकी दी हुई शक्ति से स्वंय सहायता करें इसके अलावा उनके द्वारा दुआ करते हैं और उनके तवस्सुल (माध्यम) से दुआ मांगते हैं और तवस्सुल के सुबूत हज़रत के कुछ बारे में वहाबियों के विचार के भाग में लिखे जा चुके हैं। कुछ और सबूत यहाँ लिखे जाते हैं :–

सुनन इब्ने माजा में अबू सईद खुदरी से रिवायत है कि "हज़रत[स] ने कहा कि जो अपने घर से नमाज़ के लिए निकले ये कहे अल्लाह! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ उन व्यक्तियों के हक़ का वास्ता देकर जो तेरे दरबार में प्रार्थना करने वाले हैं और तुझसे प्रार्थना करता हूँ अपना रास्ता तय करने के हक़ से जो तेरी ओर से है इसलिए कि मैं न किसी अपनी मन की चाहत के कारण से निकला हूँ न बुराई बिगाड़ के लिए। न दिखाने और सुनाने के लिए। मैं निकला हूँ केवल तेरी नाराज़ी (रूष्टता) से बचने के लिए और तेरी खुशी की चाह में, तो मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे नरक की अग्नि से बचाए रखना। मेरे पापों को क्षमा करना तेरे सिवा कोई नहीं जो पाप को क्षमा करे।"

इसे हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती ने 'जामए कबीर' में भी लिखा है और हाफ़िज़ अबू नईम इस्फ़िहानी ने "अमलुलयौम वल लैला" में अबू सईद खुदरी की रिवायत लिखी है कि

"हज़रत[स] जब नमाज़ के लिए घर से निकलते तो कहते थे कि पालनहार! मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ तुझसे प्रार्थना करने वालों के हक़ का वास्ता देकर और अपने इस उद्देश्य से निकलने (सत्य–धर्म) का वास्ता देकर कि मैं अपनी निजी लालसा वजह से नहीं निकला, न दिखाने और सुनाने के लिए। मैं निकला हूँ तेरी चाह में, तेरे क्रोध से बचने के लिए तो मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे नरक की अग्नि से बचा ले और मुझे स्वर्ग में पहुँचा दे।"

और सुयूती ने भी किताब 'अद्दअ़वात' में अबू सईद खदरी से इसकी रिवायत की है।

और महापुरूषों का चलन भी अल्लाह वालों से तवस्सुल के लिए रहा हैं। अतः इब्ने हज्र असक़लानी ने अपनी किताब "खेयरात हैसान फ़ी मनाक़िब अलईमाम अबी हनीफ़ा नो'मान" के पच्चीसवें अध्याय में लिखते हैं

"इमाम शाफ़ई जब बग़दाद में थे तो इमाम अबू हनीफ़ा की ज़रीह के पास आते थे उन्हें सलाम करते थे और अपनी चाहत पूरा होने के लिए उनसे तवस्सुल करते थे।"

अल्लामा इब्ने हजर मक्की ने इमाम शाफ़ई के शेर लिखे हैं जो उन्होंने अहलेबैते रसूल[स] के बारे में कहे थे जिनका मतलब ये है:

"आले रसूल[स] के अहलेबैत मेरा माध्यम हैं और अल्लाह के यहाँ मेरा साधन हैं। उन्हीं के द्वारा मुझे उम्मीद है कि कल प्रलय के दिन मेरे दायें हाथ में मेरा कर्मपत्र (नामए आमाल) दिया जाएगा।"

हज़रत[स] के साथ तवस्सुल की बहस में द्वितीय ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब का रसूल[स] के चचा अब्बास को वर्षा के लिए दुआ करने के लिए ले जाना लिखा जा चुका।

यहाँ उसमें कुछ और बढ़ाया जाता है इब्ने असीर जज़ाईरी ने "उसदुलग़ाबा" में लिखा है कि

"उमर बिन ख़त्ताब ने सूखे के समय में

अब्बास के द्वारा वर्षा की प्रार्थना की और अल्लाह ने वर्षा की तो उमर ने कहा अल्लाह की क़सम ये साधन है अल्लाह की ओर और ये स्थान है उनका अल्लाह के यहाँ और हस्सान बिन साबित ने इस आशय के शेर कहे कि: "जब लगातार सूखा पड़ा तो सबने अल्लाह से मांगा तो बादल ने अब्बास के चेहरे की बरकत से वर्षा की। रसूल[सा०] के चचा और उनके पिता के भाई और वह जो दूसरे लोगों को छोड़कर आपके वारिस (उत्तराधिकारी) हैं इन्हीं के द्वारा अल्लाह ने उन नगरों को जीवित किया (शहर लहलहाये) वह सूख जाने के बाद हरे-भरे हुए।' और जब बारिश हुई तो लोग अब्बास के हाथों को छूकर अपने मुहँ पर मलने लगे और कहते थे 'मुबारक हो आपको ऐ हरमैन (दो पुण्य स्थानों) के पानी पिलाने वाले' और हाफ़िज़ इब्ने हजर की रिवायत में इब्ने अब्बास की ज़बानी है कि उमर ने दुआ में कहा 'पालनहार! हम तुझसे वर्षा मांगते हैं पैग़म्बर के चचा के द्वारा और उनकी सफ़ेद दाढ़ी को शिफ़ाअत के लिए आगे करते हैं।"

इससे पता चला कि जो अच्छे सदाचारी लोगों और पहुँचे हुए महापुरूषों से तवस्सुल करें इस आयत के घेरे में लाना कि जिन्हें मुश्रिकीन पुकारते हैं ख़ुद अल्लाह के यहाँ किसी वसीले (साधन) की चिन्ता में हैं जिसे इब्ने अब्दुल वहाब ने किताब 'अत्तौहीद' में लिखा है और कहा है इसमें उन मुश्रिकों की काट है जो अच्छे लोगों से और महापुरूषों से प्रार्थना करते हैं और यह बहुत बड़ा शिर्क है जबकि इसके मुकाबले में सुरा माएदा में स्वयं अल्लाह का आदेश है कि 'अल्लाह के यहाँ के लिए साधन प्राप्त करो। इसे छोड़कर के वसीले को शिर्क कहने का नतीजा है कि उमर फ़ारूक़ काफ़िर मुशरिक हों अपने इसी कहने की वजह से जो उन्होंने जनाबे अब्बास (रजि0) के लिए कहा कि ये खुदा की क़सम अल्लाह के यहाँ के लिए वसीला हैं और उसके यहाँ ऊँचा स्थान और आदर है।

वास्तव में मुशरिकों की बुराई वसीला बनाने पर इसलिए हुई है कि वह ऐसी वस्तुओं को वसीला बनाते थे जो वसीला साधन बनाने के पात्र नहीं अर्थात् निर्जीव पत्थरों की मूर्तियाँ जबकि अल्लाह उनसे तवस्सुल की आज्ञा नहीं देता। इसलिए कुछ स्थानों पर है कि यह ऐसों को पुकारते हैं जिनके लिए अल्लाह ने कोई प्रमाण निशानी नहीं उतारी है मगर वह लोग जिन्होंने अपने अच्छे कर्मो और इबादत द्वारा अल्लाह के निकट हो गए उनके आदर सत्कार और उनके वसीले के लिए स्वंय अल्लाह की ओर से निर्देश है तो उनसे वसीला करना शिर्क क्योंकर हो सकता है? अतः मुसलमानों का हर समय में महापुरूषों के साथ तवस्सुल (वसीला बनाना) और उनकी क़ब्रों पर आना और उनसे प्रार्थना को दुआओं के कुबूल होने का ज़रिया समझना बराबर जारी रहा है।

इब्ने हजर की 'इसाबा' में अब्दुर्ररहमान बिन रबीअ़ बिन कअ़ब के बारे में है कि इन्हें द्वितीय ख़लीफ़ा उमर ने बाब वल अबवाब पर गर्वनर बनाया था और तुर्को से लड़ाई करने के लिए भेजा और वे वहीं तुर्किस्तान में दफ़्न हुए और वहाँ के लोग आज भी उनकी क़ब्र के द्वारा वर्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। और यज़ीद बिन असवद के बारे में सुलैम बिन आमिर का बयान है कि दमिश्क में सूखा पड़ा। मआविया ने यज़ीद बिन असवद के द्वारा वर्षा की प्रार्थना की जिससे वर्षा हुई। शैख़ इब्ने अरबी ने 'महाज़रतुल अबरार' में लिखा है कि अली बिन अमर कातिब ने क़ुरतुबा (**Cordoue Spain**) में बयान किया कि मुझसे अबुल क़ासिम मुहद्दिस (हदीसों के विद्वान) ने यह शेर अबू सईद बिन फ़ाज़िल के सुनाए और उनकी क़ब्र क़ुरतुबा में है उसी प्रकार दुआओं के पूरा होने के लिए मशहूर है जिस प्रकार मा'रूफ़ करख़ी की क़ब्र बग़दाद में और मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा साहब अन्सारी ने अपनी किताब 'बानिए दरसे निज़ामी' में जो (निज़ामी पाठयक्रम के संस्थापक) मुल्ला निज़ामुद्दीन फ़िरंगी महली के हाल में लिखी है। लिखते हैं कि मौलाना

इनायतुअल्लाह फिरंगी महली ने लिखा है

"पवित्र क़ब्र इस समय भी सबके लिए लाभदायक है और खासकर ईल्म (विद्या, ज्ञान) के रोगियों के लिए दवा है। मशहूर है कि जिसको किताब का अर्थ समझ में न आता हो किताब खोलकर पवित्र क़ब्र के पास रहे और हज़रत की आत्मिकता का ध्यान करे तो एकदम अर्थ समझ में आ जाएगा। (तज़करा उलमाए फ़िरंगी महल पृ. 171)

शियों में आम तौर पर और कुछ अहले सुन्नत का भी यही तरीक़ा है कि जब गिरने लगते हैं तो ''या अली[अ]'' कहते हैं और सँभल जाते हैं। मैंने जैसा कि 'सफ़र नामए हज' (हज की यात्रा का वृतान्त) में लिखा है।" मैंने मदीन ए मुनव्वरा में यह देखा कि चलने में मुझे ठोकर लगी और गिरने लगा तो एक दुकान से आवाज़ आई 'या रसूल अल्लाह[स]' और मैं सँभल गया।

वास्तव में 'या रसूल अल्लाह[स]' और 'या अली[अ]' कहने में कोई अन्तर नहीं है। मगर वहाबी विचार से दोनों ही शिर्क हैं।

अहले सुन्नत के एक बड़े गिरोह में "या शैख़ अब्दुल क़ादिर" का चलन है। मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा अन्सारी ने इसी किताब में लिखा है कि मुल्ला निज़ामुद्दीन ने कुछ लोगों को जो उनके पास दुआ कराने के लिए गये थे कहा कि तुममें से जो व्यक्ति अधिक धार्मिक हो या शैख़ अब्दुल क़ादिर शुयाअल्लाह का जितना भी हो सके विर्द (जाप) करे फिर इस फुटनोट में लिखा है

"इसके पढ़ने या न पढ़ने के बारे में उलमा में मतभेद है। कुछ उलमा इसके पढ़ने को सही नहीं समझते आज से सौ वर्ष पहले इस बारे में एक साहब ने उलमा से फत्वा चाहा उनमें मौलाना रशीद अहमद गंगोही देवबन्दी भी थे। उन्होंने भी इसे पूरी तरह ग़लत नहीं कहा है। उन उलमा के उत्तर किताब की सूरत में प्रकाशित हो चुके हैं। किताब का नाम है "फ़त्वाइ जवाज़े या शैख अब्दुल क़ादिर शुया अल्लाह" मौलाना अशरफ़ अली थानवी ने भी इसकी इजाज़त दी है। उनकी लिखित आज्ञा मैंने मौलाना मुहम्मद 'वासिक़लयक़ीन सज्जादा नशीन कुर्सी ज़िला बाराबन्की और मौलाना मुहम्मद नासिर फिरंगी महली (मुल्ला निज़ामुद्दीन के पोते) के पास स्वंय देखी है।"

यह कहना कि मुसलमान क़ब्रों पर जमकर बैठते हैं तो अगर ये जमकर बैठना कुरआन की तिलावत और तसबीह व दुआ और अच्छे कार्य के लिए है या उन आने वालों की सहायता के लिए बैठें जो यहाँ आते हैं तो इसमें कहाँ बुराई है? बल्कि यह तो अच्छे कार्य हैं।

उन इल्ज़ामों में से जो अच्छे विचारों के मुसलमानों पर लगाए जाते हैं एक बड़ी कठोरता के साथ ये भी है वह इन चौखटों को चूमते हैं मगर इसके कुफ़्र या शिर्क होने पर कोई सबूत नहीं है जबकि अल्लाह के चिन्हों के आदर के लिए कुरान में आदेश है और चूमना भी एक आदर का तरीक़ा है जिसकी आज्ञा हज़्रे असवद के लिए मौजूद है और इसके अलावा किसी को चूमने की मनाही नहीं है, तो यह आदर में सम्मिलित होगा और पहले आ चुका है। उम्मुल मोमेनीन आयशा का बयान है कि हज़रत[स] ने उस्मान बिन मज़ऊन की लाश को चूमा और मैंने देखा कि हज़रत[स] के आँसू गालों पर थे इसको सुलेमान बलख़ी क़न्दूज़ी ने 'यनाबीउल मुअद्दा' में लिखा है और इब्ने अब्बास और आयशा दोनों की रिवायत है कि प्रथम ख़लीफ़ा अबूबक्र ने हज़रत[स] की मृत्यु के बाद आपके शरीर को चूम लिया इसे इब्ने माजा ने अपनी सुनन में लिखा है। और कब्र को चूमने के लिए हज़रत[स] की हदीस है। किफ़ायाएशैबी और फ़तवाइग़राइब और मतालिबुल मोमेनीन और ख़जानतुर्राविया में है कि अपने माता पिता की क़ब्रों के चूमने में कोई ख़राबी नहीं है। इसलिए कि एक व्यक्ति हज़रत[स] के पास आया और कहा कि या रसूल अल्लाह[स] मैंने क़सम खाई है कि मैं स्वर्ग की चौखट और हूरों के माथे को चूमूँगा। अब मैं क्या करूँ? हज़रत[स] ने कहा माँ के पाँव और पिता के माथे को चूम ले। उसने कहा कि या रसूल अल्लाह अगर

मेरे माता पिता जीवित न हों तो? कहा कि क़ब्र को चूम ले। उसने कहा कि कब्र का पता न हो तो? कहा कि दो रेखाएँ खींचे एक माँ की क़ब्र के विचार से और दूसरी पिता के विचार से और उन दोनों को चूम लो। तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी।

"तमस्सुह" का अर्थ है हाथ से छूकर अपने मुहँ पर मलना। इसे वहाबी लोग रूक्ने यमानी के लिए जायज़ और अच्छा समझते हैं। इसी प्रकार दूसरे स्थानों को भी जो कि आदर के आम हुक्म पहले के महापुरूषों के और शरीयत (धर्म कानून) से मना होने के सूबूत न होने के आधार पर उसे जायज़ और अच्छा समझना चाहिए। और पहले इस किताब में आ चुका है कि जब उमर ने अब्बास का वास्ता देकर वर्षा के लिए प्रार्थना की और वर्षा हुई तो लोगों ने अब्बास के साथ तमस्सुह किया और कह रहे थे कि मुबारक हो आपको दो हरमैन के पानी पिलाने वाले।

और क़ाज़ी अय्याज़ की 'शिफ़ा' में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर को देखा गया कि उन्होंने हाथ रख मिंबर के उस स्थान पर जहाँ हज़रत[स] बैठते थे और फिर उस हाथ को अपने माथे से लगाया तो अगर छूकर अपने लगाना कुफ्र हो तो फिर उन सब सहाबियों व ताबईयों को काफ़िर समझना पड़ेगा। यह कहना कि यह लोग अपने को उन औलिया व मुक़र्रबीन (अल्लाह के क़रीबी) का मोहताज (जरूरत वाला) समझते हैं तो वास्तव में अल्लाह के बन्दे के लिए अनिवार्य है कि वह अपने को मोहताज समझे और जो अपने को ज़रूरत वाला न समझे वह काफ़िर है क्योंकि सुरः–ए–अहज़ाब में है कि:

"ऐ इन्सानो तुम अल्लाह के दरबार में मोहताज (ज़रूरत वाला) हो और अल्लाह एक मात्र है जो मोहताज नहीं है और प्रशंसा के लायक़ है।"

और सुरः–ए–मुहम्मद में है

"अल्लाह समृद्ध है और तुम सब ज़रूरत वाले हो।"

और औलिया व नेक लोगों की ज़रूरत इसलिए है कि वह अल्लाह के दरबार में हमारे लिए प्रार्थना करें और मोमिन को दूसरे मोमिन की प्रार्थना की ज़रूरत है तो फिर औलिया व मुक़र्रबीन और नबियों व रसूलों व पाक इमामों की तो और ज़्यादा जरूरत है।

ये कहना कि उनके द्वारा वर्षा मांगते हैं तो इसके बारे में पहले आ चुका है कि मदीने में सूखा पड़ा और जनाबे आयशा से शिकायत की तो उन्होंने तरकीब बताई कि हज़रत[स] की क़ब्र का एक हिस्सा आसमान के नीचे कर दो। अतः वर्षा हुई। और हज़रत उमर ने हज़रत अब्बास रसूल[स] के चचा के द्वारा वर्षा की प्रार्थना की।

यह कि भयानक वनों में इन्हें सहायता के लिए पुकारते हैं इसके लिए स्वंय हज़रत[स] का निर्देश है जिसे तबरानी ने लिखा है कि हज़रत ने कहा जब तुम में से किसी की कोई चीज़ खो जाए या किसी ऐसे स्थान पर हो जहाँ कोई सहायता करने वाला न हो तो कहो "ऐ अल्लाह के बन्दो मेरी मदद करो।" एक रिवायत में है कि "मेरी फरयाद गुहार को पहुँचो" इसलिए कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे भी हैं जिन्हें तुम देख नहीं पाते।

ये कहना कि यह लोग लड़कियों के विवाह आदि के लिए इनसे विनती (इल्तजा) करते हैं, बड़े–बड़े कार्यो में भी इन पर भरोसा करते हैं तो बे शक ये सब इस हद तक ठीक है ये उनसे अपने कार्यो के लिए दुआ की चाहत रखते हैं और इस अर्थ में उनसे सहायता चाहते है। यह कहना कि ये उनसे पापों के लिए क्षमा चाहते हैं" एक बड़ा झूठ है। कोई भी मोमिन गुनाहों की क्षमा की विनती इनसे नहीं करता बल्कि इनकी शफाअत की उम्मीद रखता है। बेशक वे आस्था रखते हैं कि पाक इमामों और खुदा के क़रीबी लागों से लगाव उनकी ओर खुदा की रहमत दया को खींचेगा जैसा कि अहलेबैत के बारे में रसूल[स0] की हदीस है कि:

"मेरे अहलेबैत की मिसाल नूह की नाव की तरह है जो इस पर सवार हुआ उसने नजात (मुक्ति) पा ली।"

और क्षमायाचना के लिए जैसा कि हम लिख चुके

हैं खुदा ने कुरआन में हुक्म दिया है कि लोग रसूल[स०] के पास हाज़िर हो और वहाँ आकर क्षमायाचना करें और फिर रसूल भी उनके लिए क्षमायाचना करें। सूरए यूसुफ़ में है कि याकूब के बेटों ने उनसे कहा कि हमारे लिए क्षमायाचना कीजिए तो उन्होंने वादा किया कि वह ऐसा ही करेंगे। हज़रत इब्राहीम ने अपने मुँह बोले बाप के लिए क्षमायाचना की और कुरान में सुरः–ए–नूह में जनाबे नूह की दुआ है कि जो मेरे घर आए उसकी क्षमा कर।

यह कहना कि जब मुसलमान इन औलिया से दुआ माँगते हैं तो खुदा का ध्यान बिल्कुल नहीं होता, यह मोमिनों के प्रति बुरा विचार बल्कि झूठा आरोप है इनको उन लोगों के दिल का हाल कैसे मालूम है? ज़रा भी सूझ बूझ रखने वाला हर मोमिन यह जानता है कि मूल याचन केन्द्र (मूल केन्द्र जिससे मांगा जाय) वास्तव में केवल अल्लाह है और ये औलिया व सालेहीन उसी की इबादत करके इस स्थान पर पहुँचे हैं। इसके अलावा और इसके विपरीत उनके दिल में कोई दूसरा ध्यान नहीं होता, आम सूफ़ीसंत के बारे में निजी तौर से जानकारी नहीं है, न हम उनकी वकालत में भी अपने पीरों और मुर्शिदों (गुरूओं) के लिए यह विचार नहीं रखते कि वे अल्लाह से बेपरवाह होकर स्वयं किसी को लाभ या नुक़सान पहुँचा सकते हैं। एक नज्दी आलिम ने जो यह कहा कि सूफ़ीयों का कहना है कि अल्लाह ने हर वली के साथ एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया जो लोगों की ज़रूरत को पूरा करे तो इसे एक बेबुनियाद बात तो समझा जा सकता है मगर इसमें कुफ़्र या शिर्क की कोई बात नहीं है इसलिए कि अल्लाह ने बृहमाण्ड में बहुत से कामों के लिए फ़रिश्ते नियुक्त किए हैं।

जैसे जिब्रील 'वहि' के अमानत दार (ट्रस्टी) है, इस्राफ़ील के ज़िम्मे सूर फूकना है, मालिक जहन्नम (नरक) के प्रभारी हैं, रिज़्वान जन्नत (स्वर्ग) के प्रभारी हैं इज़राईल यमराज (मलकुल मौत) है आदि तो अगर मानो खुदा लागों की ज़रूरत पूरी करने के लिए कोई फ़रिश्ता मुकर्रर करे तो इसमें क्या खराबी है? और यह कुरआन की उन आयतों के बिल्कुल विरोध नहीं है जिनमें यह है कि खुदा ज़रूरत पूरी करता हैं जैसे पहले आ चुका है कि मौत देना खुदा का काम है परन्तु कुरआन में ही एक जगह पर इसका सम्बन्ध मलकुल मौत (यमराज) से और कई स्थान पर फ़रिश्तों से कहा गया।

वहाबियों को सबसे अधिक पीड़ा पाक अहलेबैत के रौज़ों के महत्व और आकर्षकता को देखकर होती है। इसमें उस का हाथ है जो एक गिरोह को रसूल के अहलेबैत से बैर हो गया था। ये लोग अहलेबैत के मानने वालों पर इल्ज़ामों, आरोपों और झूट लगाने की हद कर देते हैं, जबकि यदि कोई साफ़ दिल और बेलाग मन के साथ इन रौज़ों, पर आए तो यहाँ की हर बात से तौहीद और अल्लाह की शान टपकती है। उसे खुदा के प्रति ध्यान, ज्ञान, भक्ति भाव, निष्ठा, उपासना इबादत (भक्ति) के वे दृश्य दिखेंगे जिनका जवाब कहीं और न मिलेगा और सलाम और ज़ियारतों को सुने तो उनके हर शब्द से एकेश्वरवाद (तौहीद) और उसकी महान्ता का इक़रार (मानना) उजागर होता है। जैसे हज़रत अली के रोज़े पर जो इज़्ने दुखूल (अन्दर आने की आज्ञा) की दुआ पढ़ी जाती है, उसमें हैः "कोई खुदा नहीं सिवा अल्लाह के, वह अकेला है, उसका कोई शरीक (साझी) नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद[स०] उसके बन्दे (दास) और रसूल (दूत) हैं जो उसकी ओर से हक़ (सत्य) को लेकर आए और उसके पैग़म्बरों की तस्दीक़ (सत्यापन) की।

ऐसे ही शब्द सभी ज़ियारतों और दुआओं में हैं जो इन पाक स्थानों पर पढ़े जाते हैं।

# मलाजुल उलमा मौलाना सय्यद हसन साहब का संक्षिप्त परिचय

**y§kd %len vCck]'khkegy]y[kuÅ**

यूँ तो इस जीवन के कारखाने में लोगों का आना जाना जारी है। हज़रत आदम से लेकर आज तक जो इस अस्थायी संसार में जन्म लेता है कुछ दिनों की ज़िन्दगी गुज़ारने के बाद सदैव बाक़ी रहने वाली दुनिया के लिए प्रस्थान कर जाता है। यह सिलसिला हज़रत आदम से आज तक जारी है और क़यामत तक जारी रहेगा। लोग आते हैं ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और चले जाते हैं। कुछ दिन प्रभाव रहता है और फिर ख़त्म हो जाता है। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो अपने इस क्षण भंगुर जीवन में अपने लक्ष्य को सुरक्षित रखते हुए अपने व्यक्तिगत चरित्र और कर्म से ऐसे चिन्ह छोड़ जाते हैं जो अमर होते हैं।

मौत उस की है करे जिसका ज़माना अफ़सोस
यूँ तो दुनिया में सभी आते हैं मरने के लिए

ऐसे व्यक्ति, अपना जीवन उम्मते इस्लामिया की शिक्षा एंव सुधार, इस्लाम के प्रचार प्रसार तथा दीन का गौरव बढ़ाने से सम्बन्धित कार्यों में व्यतीत करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों की सूची में मलाजुल उलमा मौलाना सय्यद हसन साहब का नाम भी सम्मिलित है जिन्होंने अपना पूरा जीवन धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया था।

मलाजुल उलमा इस्लामी फ़िक़्ह के माहिर तथा कई भाषाओं के ज्ञाता थे।

असीफ साहब के आग्रह पर मैं मलाजुल उलमा के जीवन का संक्षिप्त ख़ाका पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं। इस कार्य में मैं आबिद हुसैन हैदरी साहब द्वारा लिखित "मलाजुल उलमा एक तआरूफ़" से लाभान्वित हुआ हूं जिसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

**uke o ulc ¼oak½%**

मलाजुल उलमा सय्यद हसन नक़वी साहब इब्ने मौलाना सय्यद मोहम्मद उर्फ मीरन साहब इब्ने सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब इब्ने शम्सुल उलमा सय्यद मोहम्मद इब्राहीम साहब इब्ने मुमताजुल उलमा सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब इब्ने सय्यदुल उलमा सय्यद हुसैन साहब (इल्लीयीन मकान) इब्ने मौलाना सय्यद दिलदार अली गुफ़रानमआब।

**tUe %**

मौलाना सय्यद हसन साहब लखनऊ में पैदा हुए। आपकी जन्मतिथि चौधरी सिब्ते मोहम्मद नक़वी साहब के अनुसार 8 दिसम्बर 1934 ई0 है।

**f'k{kk %**

मलाजुल उलमा के पिता मौलाना सय्यद मोहम्मद मीरन साहब स्वयं चरित्रवान तथा ज्ञानी व्यक्ति थे। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने स्वयं दी और अपने पुत्र की बुद्धिमत्ता, अभिरूचि तथा योग्यता को देखते हुए उन्होंने उनकी लखनऊ की प्रख्यात इल्मी संस्था मदरसा–ए–नाज़मिया में दाख़िला कर दिया जहां उन्होंने मौलाना सय्यद मोहम्मद यूसुफ़ साहब, मौलाना मुक़र्रब हुसैन अमरोहवी, मौलाना सय्यद आबिद अली, मौलाना शेख नासिर अली सिरसवी, मौलाना सय्यद मोहम्मद मेहदी साहब आदि से शिक्षा प्राप्त की।

मध्य स्तर तक की शिक्षा आपने नाज़मिया मदरसे से प्राप्त फिर उच्च स्तर की शिक्षा के लिए आपने सुल्तानुल मदारिस में दाख़िला लिया। सुल्तानुल मदारिस में जिन गुरूओं से आपने शिक्षा प्राप्त की उनके नाम निम्नलिखित हैं :

1. मौलाना सय्यद अब्दुल हुसैन साहब (तर्क के विषय के विद्वान)।
2. मौलाना सय्यद अली हुसैन ।

3. मौलाना सय्यद हुसैन साहब (आले हादिये मिल्लत)।

4. मौलाना सय्यद मोहम्मद साहब (इब्ने बाक़िरूल उलूम)

5. मौलाना सय्यद हसन साहब।

6. मौलाना सय्यद अहमद साहब।

7. मौलाना सय्यद इब्ने हसन साहब नोनहरवीं (भूतपूर्व प्रिन्सपल मदरसतुल वाएज़ीन)।

8. मौलाना सय्यद अल्ताफ़ हैदर साहब(मोहम्मदाबाद, मऊ)

9. मौलाना सय्यद सग़ीर हुसैन साहब।

10.मौलाना सय्यद ख़ादिम हुसैन साहब।

11.मौलाना सय्यद आलिम हुसैन साहब (बड़ा गाँव फैज़ाबाद)

12.मौलाना सय्यद मोहम्मद आदिल साहब बाराबंकी।

13.मौलाना सय्यद अली साहब (इब्ने बाक़िरूल उलूम) पूर्व प्रिन्सपल।

14.मौलाना आरिफ़ हुसैन साहब।

मलाजुल उलमा की तालीम व तरबियत में मौलाना सय्यद अली नक़ी साहब की महत्वपूर्ण भूमिका थी। सय्यदुल उलमा ने आपको फ़िक्ह और उसूल की अनेक पुस्तकें पढ़ाई। इसके अतिरिक्त प्रायः आपको अत्यत्न उपयोगी सुझाव भी प्रदान किये। सय्यदुल उलमा की शिक्षा का ही प्रभाव था कि वह एक सुधारवादी तथा प्रभावी वक्ता और एक अच्छे लेखक और धार्मिक विद्वान बने। सुल्तानुल मदारिस की शिक्षा के साथ साथ आप ने लखनऊ युनीवर्सिटी के पूर्वी विषयों के विभाग से फ़ाज़िल (अदब) भी किया। आपने 1956 ई0 में सुल्तानुल मदारिस से शिक्षा पूरी की।

**ut Qs+v'kjQ %**

खोज एंव अनुसंधान और ज्ञान प्राप्ति की ललक में और इजाज़—ए—इज्तेहाद हासिल करने के उदे्श्य से आप नजफ़े अशरफ़ गये और वहां इमाम बुरूजर्दी के मदरसे में क़याम किया और एकाग्रता के साथ अध्यन और ज्ञान प्राप्ति में लग गये। नजफ़ में आक़ा—ए—मोहसिन हकीम, आक़ा—ए—सय्यद अबुल क़ासिम अलखूई और मोहम्मद अली मुदर्रिस अफ़ग़ानी के दर्सों में शामिल होकर लाभान्वित हुए। 1961 में लखनऊ तशरीफ़ लाए और कुछ समय लखनऊ में क़याम के बाद पहली तबलीग़ी यात्रा पर गये।

**fofHkUu ns'kksa dh ;k=k %**

आपने धार्मिक प्रचार प्रसार के सम्बन्ध में अफ़्रीक़ा के विभिन्न देशों की यात्रा की जिनमें ज़ंज़िबार, युगाण्डा तथा तंज़ानिया शामिल हैं। 1962 में पाकिस्तान की यात्रा की और 1968 में केन्या तथा तन्ज़ानिया की यात्राएं कीं। 1969 में धार्मिक प्रचार प्रसार के सिलसिले का तीसरा भ्रमण किया। 1971 ई0 में ज़ियारत के लिए ईरान और सीरिया गये। 1975 में इंग्लैण्ड गये और वहां इमामे जुमा रहे। 1982 ई0 में इंग्लैण्ड और कनाडा में तब्लीग़ी कार्य में व्यस्त रहे। 1984 में पाकिस्तान तथा दुबई की यात्रा की। 1988 और 1994 में हज के लिए गये।

**y§ku %**

मलाजुल उलमा अपनी पूरी ज़िन्दगी जुबान और कलम के माध्यम से धर्म की सेवा करते रहे और उन्होंने अपने जीवन को इस्लाम के प्रचार प्रसार के लिए वक़्फ कर दिया। आपके द्वारा लिखित एंव संकलित अनेक पुस्तकें आपका महत्वपूर्ण असासा हैं जिनमें से कुछ प्रकाशित हो चुकी हैं और कुछ अप्रकाशित हैं। कुछ महत्वपूर्ण कृतियों के नाम पेश हैं।

शरहे रियासत, शरहे किफ़ाया, हाशिय—ए—लुमआ, हाशिय—ए—स्यूती, रिसायल उर्दू, शेख काज़िम क़ज़वैनी की तक़रीर का मजमूआ, उसूले काफ़ी इन्तेखाब, उर्दू तर्जुमा व शरह (अप्रकाशित) हैं। और बहुत से लेख एंव मक़ालात ऐसे हैं जो विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और उनके लेखों का एक संग्रह ''मक़ालाते मलाजुल उलमा'' के नाम से प्रकाशित हो चुका हैं।

मलाजुल उलमा को शेरों शायरी से भी रूचि थी वह अपनी गुफ्तगू लेखों तथा मजलिसों में सर्वथा उपयुक्त शेरों का प्रयोग करते थे। चूंकि

आपका मुख्य उद्देश्य दीन का प्रचार प्रसार था आपने कभी अपने को कवि के रूप में पेश नहीं किया। निम्नलिखित शेर आप की काव्य क्षमता को प्रकट करते हैं :

खो नहीं सकता हूँ दिल को कोई दिल पाये बग़ैर
राह भूला ही नहीं हूँ राह पर आये बग़ैर
नाम मेरा आयेगा इस बज़्म में एक दिन ज़रूर
दास्ताँ रूकती नहीं है रंग पर आये बग़ैर

**eudcr dsdN 'kS j %**

अमीरूल मोमनीं की आज काबे में विलादत है
ख़लीले हक़ से बाला इब्तेदाई शाने रफ़अत है।
वह आई फ़ातिमा दीवार में दर हो गया पैदा
सदफ़ को खान–ए–काबा के इस दुर की ज़रूरत है।
शरीके नूरे पैग़म्बर अमीने फ़ितरते मुरसल
हबीबे किबरिया की हू–ब–हू सूरत है सीरत है।

इन शेरों से मालूम होता है कि मलाजुल उलमा एक उच्चकोटि के कवि थे और उन्होंने काव्य के विभिन्न रूपों में तबा आज़माई की।

मलाजुल उलमा की गणना उन लोगों में होती है जिन्होंने जुबान और कलम दोनों के माध्यम से दीन का प्रचार किया। वह एक सफ़ल वक्ता भी थे। लखनऊ में स्थायी क़याम न होने की वजह से लेखक को मौलाना की मजलिसें सुनने का ज़्यादा अवसर नहीं मिल सका लेकिन मरहूम की ख़िताबत के बारे में चौधरी सिब्ते मोहम्मद नक़वी साहब लिखते हैं कि "आप ज़ाकिर थे, तन्दुरूस्ती की कमज़ोरी से बेश्तर लखनऊ में रहते थे और आम तौर से मोमनीन को दस्तयाब हो जाया करते थे। बयान तान व तन्ज़ (व्यंग तथा भर्तसना) से खाली होता था। मनाज़रे के मज़ामीन (टकराव के विषय) भी कम पढ़ते थे। ज़्यादातर इस्लामी अक़ीदे और अख़्लाक़, रसूल व अहलेबैत के फ़ज़ायल और मसायब बयान करते थे। इसलिए हर हल्क़े में उनका बयान पसन्द किया जाता था। अब इन सिफ़ात (गुणों) का ज़ाकिर लखनऊ में बरवक्त कहाँ मिलेगा" (ताअस्सुरात मलाजुल उलमा एक ताअर्रूफ पृष्ठ 11)

मौलाना अय्यामे अज़ा में पहले अशरे की मजलिस हुसैनिया जन्नतमआब और आग़ा होम्यो में ख़िताब करते थे। मौलाना के क़रीबी लोग बताते हैं कि वह हर साल कई सौ मजलिसें पढ़ते थे। मुल्क के बाहर भी उनकी खिताबत की ख्याति थी। आदरणीय आबिद हैदरी साहब अमीरूल उलमा के हवाले से लिखते हैं कि "हमीदुल हसन साहब क़िब्ला का बयान है कि मैं जिस मुल्क में गया और जहाँ गया वहां के लोगों से उनकी तारीफ़ सुनी। कोई शिकायती जुमला सुनने में नहीं आया।"

**chekjh vkSj nsgkUr %**

मौलाना दिल के मरीज़ थे और ब्लड प्रेशर तथा शुगर जैसे खतरनाक रोगों से ग्रस्त थे जिनके बारे में यह कहा जाता है कि ये इन्सान के साथ ही जाया करते हैं। मौलाना ने भरपूर इलाज भी करवाया। उपचार के लिए आप यूरोप भी गये। वक़्ती फ़ायदा भी हुआ लेकिन कमज़ोरी बढ़ती गई। 16 अक्टूबर 1996 ई0 को उनकी तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गई। संजय गांधी मेडिकल इन्स्टीट्यूट ले जाया गया। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ और 18 अक्टूबर 1996 शुक्रवार को प्रातः 8 बजे आपका देहान्त हो गया। उनके देहान्त की ख़बर लखनऊ में जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग गिरोह दर गिरोह शरीयत क़दे पर आने लगे। दुकाने बन्द हो गईं। 6 बजे शाम को जनाज़ा शरीयत क़दे से इमामबाड़ा जन्नतमआब लाया गया। नमाज़े जनाज़ा हकीमे उम्मत डा0 कल्बे सादिक साहब क़िब्ला ने पढ़ाई। 9 बजे शब में अपने वालिद की क़ब्र के नज़दीक दफ्न हुए और ज़िन्दगी भर ज़िक्रे हुसैन करने वाले ज़ाकिर को बारगाहे हुसैन में अबदी आराम मिल गया।

इल्म की बख़्शी कुछ ऐसी रौशनी सय्यद हसन
भूल पायेगी न तुम को ज़िन्दगी सय्यद हसन।
जब शहीदे कर्बला के ग़म का सावन आएगा
याद आएगी तुम्हारी ज़ाकेरी सय्यद हसन।
हाशिये लुम्आ स्यूती और रसायल पर तेरे
हैं दलीलें तेरे इल्मो फ़ज़्ल की सय्यद हसन।
मिसर–ए–तारीख़ ʽu ,; j* के क़लम ने यूँ लिखा
आलिमे दीं ज़ाकिरे आले नबी सय्यद हसन।
1417 हि0

✦✦✦

## [illegible]

लेखकः समद अब्बास, लखनऊ

1. जन्म 18 जनवरी 1923 मुताबिक 1 जमादि–उस्सानी 1341 हिजरी।
2. सुल्तानुल मदारिस की प्रथम कक्षा में प्रवेश 1 अर्पैल 1930 ई0
3. बाक़िरुल उलूम मौलाना सय्यद बाक़िर साहब की बेटी के साथ विवाह 1945 ई0
4. सुल्तानुल मदारिस लखनऊ से सद्रुल अफ़ाज़िल 1945 ई0 में प्रथम श्रेणी में किया।

**5- fgUnqLrku esa muds [kkl mLrkn ¼xq½%**

(1) मौलाना मोहम्मद आदिल साहब क़िबला
(2) मौलाना अली हुसैन साहब क़िब्ला
(3) मौलाना आरिफ हुसैन साहब क़िब्ला
(4) मौलाना अल्ताफ़ हैदर साहब क़िब्ला
(5) मौलाना सग़ीर हुसैन साहब क़िब्ला
(6) मौलाना मोहम्मद इब्ने हसन साहब क़िब्ला नौनेहरवी
(7) मौलाना अब्दुल हुसैन साहब क़िब्ला
(8) मौलाना सय्यद मोहम्मद साहब क़िब्ला
(9) मौलाना सय्यद हसन साहब क़िब्ला
(10)मौलाना सय्यद हुसैन साहब क़िब्ला

6. इराक के लिए रवानगी 1946 ई0

7. कर्बला में ख़ास उस्ताद : आयतुल्लाह सय्यद महदी शीराज़ी

8. नजफ़ में ख़ास उस्ताद : आयतुल्लाह मुहसिन हकीम :आयतुल्लाह मुहम्मद शाहरूदी

9. इराक़ से वापसी 1949 ई0

10.मदरसा सुल्तानुल मदारिस में मुदर्रिस : दिसम्बर 1950 से जून 1972

11.मुस्लिम युनीवर्सिटी अलीगढ़ में प्रोफेसर : नवम्बर 1947 से जनवरी 1983 तक

**12-vkids dqN [kkl 'kkfxnZ ¼f'k";½%**

(1) मौलाना आग़ा जाफ़र साहब किब्ला (पाकिस्तान)
(2) मौलाना रज़ी जाफ़र साहब साहब क़िब्ला (पाकिस्तान)
(3) मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद आलिम साहब क़िब्ला मरहूम
(4) मौलाना मिर्ज़ा मोहम्मद अतहर साहब क़िब्ला
(5) डा0 मौलाना इमरान रज़ा साहब क़िब्ला
(6) मौलाना अली इब्नुल हुसैन साहब क़िब्ला नौनेहरवी
(7) मौलाना शफ़ीक़ हुसैन साहब क़िब्ला
(8) मौलाना नबी हसन साहब क़िब्ला
(9) मौलाना राशिद हुसैन साहब क़िब्ला
(10)मौलाना सय्यद हसन नक़वी साहब क़िब्ला मरहूम
(11)मौलाना इफ्तिख़ार हुसैन साहब क़िब्ला कश्मीरी
(12)मौलाना मोहम्मद तक़ी साहब क़िब्ला (आले बाक़ेरुल उलूम)
(13)मौलाना मसरूर हुसैन साहब क़िब्ला
(14)मौलाना इब्राहीम अली साहब क़िब्ला हैदराबादी
(15)मौलाना गुलाम रसूल साहब क़िब्ला
(16)मौलाना हकीम नासिर अब्बास साहब क़िब्ला
(17)मौलाना अली क़ासिम साहब क़िब्ला
(18)मौलाना इब्ने हसन साहब क़िब्ला
(19)मौलाना ज़ाहिद अहमद साहब क़िब्ला
(20)मौलाना तफ़ज़्ज़ुल नक़वी साहब क़िब्ला

**13- ys[ku %**एमादुत तहक़ीक़ (उर्दु)

**14- eUlc ¼in½%**

1. इमामत जुमा लखनऊ 1949 ई0 से 1963 ई0 तक अस्थायी व नियाबत सरकार उमदतुल उलमा तथा 1963 ई0 से दिसम्बर 1986 स्थायी।

2. उपाध्यक्ष, आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड।

3. डीन, फैकल्टी ऑफ थियॉलोजी मुस्लिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़।

4. मेम्बर सेन्र्टल हज कमेटी।

5. मेम्बर, मुस्लिम यूनिवर्सिटी कोर्ट।

6. मेम्बर, उर्दु अकादमी।

7. अध्यक्ष, आल इण्डिया शिया कान्फ्रेंस।

14. इमामबाड़ा गुफ़रानमआब में पहला अशर–ए–मुहर्रमः 1384 हिजरी मुताबिक 1964 ई0।

15. आख़री मजलिस : कस्बा नसीराबाद रायबरेली 13 दिसम्बर 1986 ई0।

16. तारीख़े वफ़ात : 13 दिसम्बर 1986 ई0 8 बजकर 15 मिनट सुबह।

17. वफ़ात का स्थान : फाफामऊ के निकट ज़िला इलाहाबाद।



# eq[; lekpkj

## reke ikcfUn;kj [kRe gksus rd tkjh eqgkgsnk ugh gksxk% bZjkuh jk"Vªifr

bZjku ds lnj gluk :gkuh us dgk gS fd bu dkeksa ds ml oDr rd exfjc ds lkFk tkjh eqgkgsnk ij nLr[kr ugha djsaxs tc rd fd rgjku ij vk;n reke cSuy vdokeh ikcfUn;ka ugha gVk yh tkrha] tSls gh ;s [kRe dh tk,axh bZjku ds ^^tkjh VsDuksykWth ds fnu** ds ekSds ij Vh0 oh0 ij vius [kkbc esa lnj :gkuh us eqgk;nk ds fy, mu ds cdkSy vkyeh rkdrksa ds rjQ ls ^^bZjku ds [kykQ rkdr dh tcku bLrseky** djus dk Hkh ekeyk jn fd;k] bZjku vkSj Ng vkyeh rkdrksa ds chp xqtjs tqykbZ ls tkjh eqgk;nk ds fy, cqfu;knh [kkdsa [khap fy, x, Fks ftu dh cqfu;kn ij ,d gRrehe eqgk;nk 30 twu rd r; djuk gS

tkjh eqgk;nk ds ckjs esa bZjku ij dkSu lh rkdrsa Hkh ;s dgrh gSa fd ,sls ekeys gSa tks ij rkgky Qhrk esa [kys gq, gSaA bZjku dk eqrkyck gS fd ;s ikcfUn;ka QkSju [kRe dh tk;sa tc fd vefjdk bu ds cjgyQ ikcfUn;ksa dks lnj dh gn rd ,d vkSj ,[kykdh vefjdh ofthj [kkjtk ds dgus ds ,d rjg cqfu;knh lsb;kl vefjdh Vh0 oh0 ^lh0 ch0 ,l0** ds ik'kk U;wt vkoj esa dgk fd fiNys gQ~rs tks eqgk;nk gqvk mlls igys bZjku eqtfjek vkSj vefjdk ds chp cgqr lh ckrsa r; gks xbZa fd bZjku dk tkjh izksxzke iwjh rjg ls vefjdh gqdwer vkSj ml ds bRrgkfn;ksa ds eqrkfcd gks tk;sxk ftlls bZjku ij tkjh izksxzke ij ikcanh yx tk;sxh

tc fd rgjku ,sls 'kdwd o 'kqcgkr dks jn djrk gS fd vkSj dgk gS fd bl dk tkjh izksxzke iqjvEu edkfln ds fy;s gS bZjku vcrd vdokeh ,sa tkjh fuxjkuh ds bl rgdhd dk tokc nsrs gq, dgk x;k Fkk fd rgjku ds tkjh izksxzke ds ckjs esa fQygky dksbZ Lkjhuk bZjku ij ecuh gSA

## xqtZ mjnu esa bLykeh Qkst ds Nkis vkSj fQfyLrhuh fxj¶rkj

7@ vizSy dks fQfyLrhu ds edcwtk xjch lkfgy ds uxj esa dfct ls eqdksa ds uafncksa ds ldrh us mldk ij ekbZuks QkSt ;kusabZ ;gwnh tqYe dk 'kdkj gq, fQfyLrhuh ds ukex ds lkFk eqdk;ys esa ds cky ys fy;k yk;k fd fQfyLrhu ds ekSds ij ;gwnh tqYe ds Fks vkSj ckn esa Q;ksa fQfyLrhuh ;kn dh tc igys Hkh eqgkfQt fQfyLrhuh ds vkSj vyx fcuk fQfyLrhuh ds ryk'kh yh vkSj mu dks fxj¶rkj djds tkus ds ckn ekywe gqvk fd ;s ,d ckr gS fd 'kgj ds bLykeh QkSt ds dqN yksxksa us nkSjs dh fxj¶rkj fd;s x, ekjdk ds fuxjkuh eq[kkcjksa ds ekfeys dh fy;k x;kA ;s bLrseky fd;k vkSj bl ckr dh tkudkjh yh vkSj mUgsa Hkh fxj¶rkj dj fy;kA

# bZku dk;eu esa d+kesa v eu ds fy;s pkjfudkrh eUlwck

**15**@vizSy dks bZku us ;eu esa d+kes v eu ds fy;s ,d pkjfudkrh eulwck iSk fd;k gS blesa ;eu esa Qk¶+u tax cUnh ij tksj fn;k x;k gS vkSj bl ds ckn rekke fQ+jdksa ds njfe;ku xSj e'k+fd;k ckrphr ij tksj fn;k x;k gS bZku ds lkFk lkFk (ctFk) --- 

;eu esa Qk¶+u tax cUnh ij tksj fn;k x;k gS vkSj bl ds ckn rekke fQ+jdksa ds njfe;ku xSj eq'kfd;ksa dh lykl;h esa equ/kdjsk dh rtoht+ iSk dh x;h gS bZku h otkjs [kkjtk ds lgk;d tokn tjhQ+ us eaxy ds jkst+ Lisu ds nkjyq gqdwer fe'jhM esa U;wt+ dkUÝsUl esa bl et oT+keulwcs ds [knks[kky c;ku fd;s gSa bUgksaus us dgk fd ^^esSau stax cUnh dh rtoht+ iSk dh gS bl ds ckn ;eu ds rekke Qjhdksa ds njfe;ku fetkdjkr gksus pkfg;sa vkSj bu esa ndqjksa dks lgwyr nsus okyk kfdjnkj vnk djuk pkfg;sA bu ds urkbt esa bZku esa ;eu esa ,d olhv &my&cfu;kn dksS hgdwer dk;e dh tk;s bZku ds lkjdkjh Vsyhoht+u pSuy ij Vh0oh0 us bl lsigys ;s bRryk nh gS fd bZku ;eu esa tkjh cgjku ds gy ds fy, v depk esk Rrgsn kesa **14**@vizSy dks ,d pkjfudkrh veu eulwck iSk djsxk] vxz+ht+ eku esa u'kj;kr iSk djus okys bl ljdkjh Vh0oh0 pSuy us bl et oT+keulwcs dh etd rQlhy c;ku ugha dh gS ysfdu otkjs [kkjtk tokn tjhQ usbl ds pkjfudkr ;sc;ku fd;s gSa **1**½ Qkjh v kSj rekke fQjdksa esa tax cUnh gksuh pkfg;s] ½**2**½ tax lsekos ksk ,ykdksa esa bUlkuh lgk;rk igqapkbZ tk;s] ½**3**½ rekke ;euh /kMksa ds njfe;ku etkdjkr gksus pkfg;s vkSj ½**4**½ ,d olhv &my&cfu;kn gqdwer dk;e dh tk;sA bZku h otkjs [kkjtk eqkdfy Q+ eqdksa ds nkSjs ij gSa vkSj og vyeh jgueqkvksa ls viuse qd ds N%cMh+ rkdr ksa ds lkFk r;i k;s vksjh Ýe+ odZl e>kSs ds vyko ;eu esa tkjh cgjku ij ckr phr dj jgs gSaA bZku vkyeh lQkjrh egkt+ ij gS ;ksa dh ovdkyr Hkh dj jgk gS vkSj bu ds [ksyQ lÅnh vjc dh d;knr esa nl eqydh bRrgkn ds QtkbZ geyksa dh 'knhn eqKkyQr dj jgk gS gkS ;ksa us ;eu ds nkjyq gqdwer luvk ij xqt+'rk lky flrEcj ls d@t+k dj j[kk gS bUgksaus eqYd ds eqr[kc lnj eUlwj gknh vkSj eqRrQsdk otkjs vkt+e [kkfyn cgkg dks ek'tw dj ds [kkq ghr eq b[rs;kjkr lhkky fy;s Fks vkSj bl ds ckn eqYd ds 'kgj vnu vkSj nwljs ,ykdksa dh tkfuc p<kbZ dj nh FkhA bu dh nj[e+kLr ij lÅnh vjc ds yMkdw r;kjs ;eu esa gwFh ckfx;ksa vkSj bu dh bRrgkn eyh'k;kvksa ds f[kykQ+ **26**@ ekpZ ls QtkbZ geys dj jgs gSaA QtkbZ cEckjh esa gkSS ;ksa dks Hkkjh tkuh uqdlku mBkuk iM+k gSA]

## cxnkn esa ce /kekds] 28 yksxksa dh ekSr 6 ?kk;y

vgyscSr ¼v0½ U;wt+ ,tsUlh] bcuk] dh fjiksVZ ds eqrkfcd **14** vizSy dks ,d dkj ce /kekdk cxnkn ds e'kfjd esa okd, &my&eqkry ds ,ykds esa gqvk ftl esa N% yksxksa dh ekSr vkSj lksyg nhxj t[+eh gq, tcfd cxnkn ds tuwc ds byk+ ds ean;u esa gks okys nks dkj /kekdksa esa N% vQ+jkn t[+eh gq, gSaA

nwljh tkfuc bZkd ds lwcs &my&vuckj dh dkSfly ds p;sjesSu us ,yku fd;k gS fd djnLrku dhe dkeh bUrtkfe;k ds lkj cjkg ekl Ån ckjtkuh us nkbZk ng'kr xnZfxjksa dk eqkcyk] vkSj lwcs &my&vuckj esa flD;kfjVh Qkjls+ vkSj dckbZh o vokeh jtkdkjksa ds lkFk rvkmu dj us ds fy;s dqZi Ske jxg eyh'k;k jokuk fd;s tkus dh fgek;r dh gSA